जिया कब तक उलझेगा...

(कविवर पण्डितश्री राजमल पवैया)

जिया कब तक उलझेगा संसार विकल्पों में।
कितने भव बीत चुके संकल्प-विकल्पों में॥
उड़-उड़ कर यह चेतन गति-गति में जाता है।
रागों में लिप्त सदा भव-भव दुःख पाता है॥
पल भर को भी न कभी निज आतम ध्याता है।
निज तो न सुहाता है पर ही मन भाता है॥
यह जीवन बीत रहा झूठे संकल्पों में॥जिया... ॥
निज आत्मस्वरूप लखें तत्त्वों का कर निर्णय।
मिथ्यात्व छूट जाए समकित प्रगटे निजमय॥
निज परिणति रमण करे हो निश्चय रत्नत्रय।
निर्वाण मिले निश्चित छूटे यह भव दुखमय॥
सुख ज्ञान अनन्त मिले चिन्मय की गल्पों में॥जिया... ॥
शुभ-अशुभ विभाव तजे हैं हेय अरे आस्रव।
संवर का साधन ले चेतन का ले अनुभव॥
शुद्धात्मा का चिन्तन आनन्द अतुल अनुभव।
कर्मों की पगध्वनि का मिट जायेगा कलरव॥
तू सिद्ध स्वयं होगा पुरुषार्थ स्वकल्पों में॥जिया... ॥
यदि अवसर चूका तो भव-भव पछताएगा।
फिर काल अनन्त अरे दुःख का धन छाएगा॥
यह नर भव कठिन महा किस गति में जाएगा।
नर भव पाया भी तो जिनश्रुत ना पाएगा॥
अनगिनती जन्मों में अनगिनती कल्पों में॥जिया... ॥